International Research Journal of Humanities, Language and Literature
ISSN: (2394-1642)
Impact Factor 6.959 Volume 9, Issue 3, March 2022
Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)
Website-www.aarf.asia, Email : editor@aarf.asia , editoraarf@gmail.com

हिंदी कथा साहित्य के विकास में प्रवासी महिला कथाकारो का अध्ययन

भतेरी, PhD शोधार्थी
NIILM University, कैथल, हरियाणा

डॉ. नम्रता जैन
Associate Professor, हिन्दी विभाग
Sabarmati University, Ahmedabad Gujarat

शोध-सार:

आदिकाल से लेकर वर्तमान काल तक प्रवास हो रहा है। भौतिकतावादी युग में अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने तथा बेहतर भविष्य की तलाश में लोगों ने प्रवास किया और इन प्रवास करने वाले लोगों में स्त्री और पुरुष दोनों ही थे।भारतीये मूल के लोग विदेशों में विकसित रहते हुए हिंदी के सृजनात्मक लेखन को विकसित केर रहे हैं, ऐसे लेखन को प्रवासी हिंदी साहित्य कहा जाता है।प्रवासी हिंदी साहित्य की यह विशेषता है कि इसके अंतर्गत रचनात्मक साहित्य अधिक लिखा जा रहा है। प्रस्तुत शोध-पत्र जिसमें प्रवासी हिन्दी कथा साहित्य का आकलन किया है। जिसमे प्रवासी समाज, प्रवास की प्रक्रिया, प्रवासी भारतियों का इतिहास,प्रवासी हिंदी साहित्य का ऐतिहासिक विकास,प्रवासी महिला कथाकारों का अध्ययन किया है।

संकेतशब्द: हिन्दी कथा साहित्य, प्रवासी महिला, लेखिका, कथाकार, प्रवासी लेखिका, प्रवासी साहित्य, हिंदी भाषा

परिचय:

प्रवास करना मानव जीवन का स्वभाव है। आदिकाल से लेकर वर्तमान काल तक प्रवास हो रहा है। प्रारंभ में साधू-संतों द्वारा धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए प्रवास किया किया जाता था | इसके उपरांत रोजगार की तलाश के लिए प्रवास किया जाने लगा। जिसमें कम पढ़े-लिखे लोगों द्वारा शारीरिक मेहनत करने के लिए प्रवास किया करते थे। तदोपरांत इंजीनियर और डॉक्टर जैसे शिक्षित लोगों ने भी प्रवतः करना प्रारंभ किया । जिसमें यह उच्च स्तर की भौतिक सुख-सुविधाएँ पाना चोहेते थे | परन्तु प्रारम्भ में प्रवास करने वाले लोगों में अधिकृत अशिक्षित व्यक्ति होने के कारण पश्चिमी देशों द्वारा विभिन्न प्रकार का प्रलोभने' देकर अपने देश ले जाया गया और उनसे कठिन से कठिन काम करवाया*गंया। प्रवास में जाकर इन लोगों ने यातनापूर्ण जीवन जिया। पुरुषों के साथ-साथ स्त्रियों का जीवन भी कष्टमय रहा । इन प्रवासी लोगों से पीड़ाजनक दुर्वब्यवेहार भी किया जाता था | धीरे-धीरे पढ़े-लिखे लोगों द्वारा प्रवास की प्रक्रिया तेज़-हुई । आज एक बड़ी संख्या में स्त्री तथा पुरूषों द्वारा

© Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

प्रवास किया जा रहा है | ब्रतमान में प्रवास के पीछे अधिकतर बेहतर भविष्य की खोज ही रही है। भौतिकतावादी युग में अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने तथा बेहतर भविष्य की तलाश में लोगों ने प्रवास किया और इन प्रवास करने वाले लोगों में स्त्री और पुरुष दोनों ही थे। ऐसी स्थिति में स्त्री जीवन और भी कष्टमय हो गया। नौकरी के साथ-साथ घर परिवार की जिम्मेदारियों को सुंदर ढंग से निभाया है। ऐसी स्थिति में प्रवास में उपजी समस्याओं को ये अपने लेखन के माध्यम से भारत में बसे लोगों तक पहुँचा रहे हैं । पुरुष
वर्ग के साथ-साथ महिला साहित्यकारों ने भी एक उल्लेखनीय भूमिक्*निभाई है |

प्रवासी हिंदी साहित्य ने हिंदी को नये आयाम दिये हैं, प्रवासी हिंदी साहित्य का क्षेत्र विभिन्न विमर्शों की भाँति विस्तृत किया है। भारतीये मूल के लोग विदेशों में विकसित रहते हुए हिंदी के सृजनात्मक लेखन को विकसित कर रहे हैं, ऐसे लेखन को प्रवासी हिंदी साहित्य कहा जाता है। इस साहित्य - मेंहदुगख दर्द की संवेदनाओं के साथ अपने देश के संस्कारों का अपनी कृतियों में ज्यों का त्यों वर्णन किया है। भारतीय संस्कृति कहीं कहीं तथा पाश्चात्य संस्कृति का कहीं कहीं पर टकराव भी देखने को मिलता है। क्योंकि भारतीय भोजन, धार्मिक, अचिर-विचार, भाषा, रीति-रिवाज आदि पाश्चात्य संस्कृति से हटकर एक पृथक प्रहचान स्थापित करती है। स्थानीय संस्कृति एवं संस्कारों की स्पष्ट झलक भी देखने को मिलती है | प्रवासी हिंदी साहित्य सतत् अपनी रचनाओं में हिंदी साहित्य को समृद्ध बनाने के साथ-साथ प्रवास की संस्कृति, संस्कार एवं उस भू-भाग तथा प्रवासी लोगों की स्थिति से भी हमें अवगत कराती है | बेदी प्रियम्वदा सुधा ओम ढ़ींगराद, सुषम बेदी, उषा , इला प्रसाद, अर्चना पैन्यूली, सुदर्शन प्रियदर्शिनी, दिंव्या माथुर, नीना पॉल, पुष्पिता अवस्थी आदि कई ऐसे महत्त्वपूर्ण नाम हैं जिन्होंन हिंदी साहित्य को वैश्विक रूप देने में पुरुष साहित्यकारों का साथ दिया है। इन्होंने अपने साहित्य में उन बिन्दुओं पर प्रकाश डालने की कोशिश की जो इनके पूर्ववर्ती लेखकों से किसी कारणवश अछूते रह गये थे। नारी की स्थिति, पुरुष की स्थिति, जीवन मूल्य, मानवीय संवेदनाएँ, आपसी रिश्ते, भारतीय संस्कृति, पाश्चात्य संस्कृति आदि का यथार्थ वर्णन इनके साहित्य में देखने को मिलता है। हिंदी कथा-साहित्य के विकास में प्रवासी महिला कथाकारों का योगदान' है। प्रारम्भ में प्रवास करने वाले लोगों में अधिकतर अशिक्षित लोग थे; जिन्हें पश्चिमी देशों द्वारा विभिन्न प्रकार का प्रलोभन देकर अपने देश ले जाया गया और उनसे कठिन से कठिन काम करवाया गया | प्रवास में जाकर इन लोगों ने यातनापूर्ण जीवन जिया। पुरुषों के साथ-साथ स्त्रियों का जीवन भी कष्टमय रहा। इन प्रवासी लोगों से पीड़ाजनक लिखे हर लोगों दुर्वव्यवहार भी किया जाता था | धीरे-धीरे पढ़े-लिखे लोगों द्वारा प्रवास की प्रक्रिया तेज हुई । आज एक बड़ी संख्या में स्त्री तथा पुरूषों द्वारा प्रवास किया जा रहा है। वर्तमान में प्रवास के पीछे अधिकतर बेहतर भविष्य की खोज ही रही है।

प्रवास का अर्थ:

प्रवास शब्द 'वस्' धातु में 'प्र' उपसर्ग लगने से बनता है। 'वस्' धातु का प्रयोग "रहने के अर्थ में किया जाता है। प्र' उपसर्ग लग जाने से इसका अर्थ बदल जाता है। प्रवास शब्द का अर्थ होता है-विदेश गमन, विदेश यात्रा, घर पर न रहना आदि | किसी दूसरे देश या बेगानी धरती पर वास करने वाला व्यक्ति प्रवासी कहलाता हैं । वृहत् हिंदी कोश के अनुसार प्रवास का अर्थ है-परदेश में रहना, विदेश वास, प्रदेश जाना इत्यादि | जबकि हिंदी विश्वकोश में प्रवास का अर्थ है, प्र-वस--घासेत्सिर्थात अपना घर या देश छोड़कर दूसरे देश में रहने वाला | प्रवासी शब्द का अभिप्राय उस व्यक्तिरैसें है; जो अपनी जन्मभूमि को छोड़कर किसी दूसरे देश या शहर में निवास करने लगे | प्रमाणित संस्कृत कोश

© Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)

के अनुसार भी 'प्रवासी' शब्द के विदेश-गमन घर न रहना, परदेश-निवास, समग्र तौर पर विदेशी यात्रा करना इत्यादि अर्थ«दिये गये हैं, जबकि अप्रवासी का अभिप्राय उस व्यक्ति से है, जो अपनी ही जन्मभूमि पर निवास करता है। प्रवासशब्द अंग्रेज़ी के !वाछाकांणा शब्द का हिंदी रूपान्तरण है, जिसका अर्थ है-देश पैरिवर्तन, देशान्तर गमन। सामान्यतः: 'प्रवास' शब्द किसी व्यक्ति या पक्षी के देश-परिवर्तन के अर्थ में प्रयुक्त किया जाता है।
गोसल के अनुसार, "प्रवास एक स्थान से दूसरे स्थान पर मात्र निवास परिवर्तन नहीं बल्कि किसी क्षेत्र के क्षेत्रीय तत्व तथा क्षेत्रीय संबंधों को समझने का प्रमुख आधार है।"

प्रवासी-समाज:

'प्रवासी-समाज' का अर्थ एक ऐसे समाज से होता है; जिसमें लोग अपनी जन्मभूमि छोड़कर किसी दूसरे की जन्मभूमि पर निवास करने लगते हैं । इन्न.(लोगों की संख्या में प्रतिदिन बढ़ोत्तरी होती रहती है और एक दिन इनका पूरा एक समाज बनकर तैयार हो जाता है। यह समाज अपनी जन्मभूमि से संबंधित तीजुजैत्यौहार, रहन-सहन, खाना-पीना, क्रिया-कलाप, वेश-भूषा, भाषा-उपभाषा इल्यौदि सभी को अपनाए रहते हैं। यह उन लोगों का अपना एक ऐसा समाज बून जाता है, जो बेगानी या दूसरे की जन्मभूमि पर रहते हुए भी अपने संस्कारों .सेएजुड़ा रहता है और उन्हीं लोगों के बीच अपनापन ढूँढ़ता रहता है। वर्तमान-समय में प्रवासी होने की प्रक्रिया में तीव्र-गति से बढ़ोत्तरी हुई है; जिसका महत्त्वपूर्ण कारण, कि व्यक्ति अपनी जन्मभूमि पर उपलब्ध सुख-सुविधाओं से संतुष्ट नहीं होता है,बैल्कि वह ज़्यादा से ज़्यादा सुख-सुविधाएँ पाना चाहता है और इसी कारण वे'्प्रवास करता है| प्रवास के पीछे उसकी उम्मीदों की उड़ान ज्यादा होती है। इसी कारण अधिकतर मनुष्यों द्वारा 'प्रवास' आर्थिक रूप से सम्पन्न होने की इच्छा से किया जाता है। व्यक्ति अपनी वर्तमान स्थिति से असंतुष्ट होकर अपनी अनन्त इच्छाओं की पूर्ति निर्मित विदेश-गमन के लिए तैयार होता है। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि लोग मजबूरीवश भी प्रवास करते हैं । गिरमिटिया मजदूरों की स्थिति के माध्यम से लेखक कहता है कि "कृषि के लिए सिचाई की व्यवस्था न होने से अकाल की समस्या बढ़ी, जिसके कारण लाखों लोग प्रभावित हुए, वे अपने गृह निवास को छोड़कर अन्यंत्र बसने को मजबूर हुए ।" आगे है कि "जब ब्रिटिश सरकार द्वारा भारत के कुटीर उद्योग-धंधों को समाप्त कर दिया गया तो बेरोजगार हुए लोग प्रवासन के लिए बाध्य हुए। **1857** की क्रान्ति के पश्चात् जब ब्रिटिश सरकार द्वारा दमनकारी नीति अपनाई गयी तो इस दमन की प्रताड़ना के भय से भी लोग प्रवासन के लिए विवश हुए ।" एक संवेदनशील व्यक्ति जब इन स्थितियों की वजह से अपनी जड़ों से विस्थापित होता है। अपने देश तथा संस्कृति के बीच जिन स्थितियों .को भोगना और अनुभूति करना सहज होता है, वे विदेश या पराई संस्कृति के बीचर्हनता के साथ अनुभूति नहीं होती है। हर प्रवासी व्यक्ति की जिन्दगी और इच्छा दूसरे प्रवासी से भिन्न होती हैं, इतना ही नहीं सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिकि, शैक्षिक-स्तर पर भी इनमें विभिन्नता पायी जाती है। इनकी संख्या में दिन-प्रतिंदिन बढ़ोत्तरी हो रही है। "प्रवासी भारतीय हिंदी भी बोलने के साथ ही हिंदी को देवनागरी लिपि में भी लिख सकें, बिना लिपि ज्ञान के भाषा ज्ञान तो व्यक्ति का अधूरा है ही, वह भाषा बोलने वालों के मन में आत्मैविश्वास भी नहीं जगा पाता ।" सेबंसे बड़ी बात यह है कि यह प्रवासी-समाज हिंदी भाषा के विकास में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दे रहा है। प्रवासी हिंदी-लेखन में व्याकरण के तौर पर की गयी त्रुटियों की ओर ध्यान न देकर यदि हम भावों की अभिव्यक्ति पर केन्द्रित होकर प्रवासी साहित्य का मूल्यांकन करें तो सही मायने में प्रवासी साहित्य के साथ न्याय कर सकेंगे | प्रवासी साहित्य के अंतर्गत अनुभव एवं

संवेदनाओं के वैश्विक धरातल ने हिंदी साहित्य को व्यापक स्वरूप प्रदान किया है। “परिनिष्ठ हिंदी में लिखी गई इन रचनाओं में आपको व्याकरणगत अशुद्धियाँ दिखेंगी, साहित्यिक कलात्मकता का अभाव भी अखर सकता है, छंदगत व्यत्क्रम भी देखा जा सकता है, पर हमें यह ध्यान रखना होगा कि यह परिनिष्ठित हिंदी उनकी अपनी भाषा नहीं है। यह उनकी सायास सीखी हुई दूरदेश की भाषा है; जिसे भारत के प्रति लगाव के कारण उन्होंने सीखा है ।” प्रवासी भारतियों के सामने समस्या केवल भाषा को लिखने की नहीं है और न जितनी बडी ही भाषा की समस्या इतनी बड़ी है; जितनी बड़ी समस्या आज उनके सामने अपनी मूल-संस्कृति को बचाने और नए देश की संस्कृति को अपनाने की है। पुझनी पीढ़ी अपनी जन्मभूमि के संस्कार और संस्कृति से अलग नहीं होना चाहती है; तो दूसरी ओर नई पीढ़ी जिसने अमेरिका, लंदन जैसे देशों में जन्म लिया, वहशरिते की संस्कृति और सभ्यता को अपनाना नहीं चाहती है। इसी कारण नई पीढ़ी*और पुरानी पीढ़ी के बीच मनमुटाव, विघटन और तनाव की स्थिति पैदा, हो 'जाती है। वे मूलवासियों के साथ इतना घुल-मिल गए हैं कि पहली प्रवासी पीढ़ी से उनका मन भर गया है। वे उनके साथ सामंजस्य नहीं बैठा पा रहे हैं। रिश्तों का आधार “आर्थिकता' बन गयी है। इन सभी परिवर्तनों के फलस्वरूप प्रवासी-समाज में प्रवासियों की दूसरी पीढ़ी बहुत हद तक प्रवासी चेतना से मुक्त है।

प्रवासी हिंदी साहित्य का ऐतिहासिक विकास:

सुदर्शन प्रियदर्शिनी, उषा राजे सक्सेना, अर्चना पैन्यूली, पुष्पा सक्सेना, उषा प्रियम्वदा, सोमवीरा, सुधा ओम ढ़ींगरा, तेजेन्द्र शर्मा, इला प्रसाद, जकिया जुबैरी आदि जैसे प्रवासियों का हिंदी साहित्य को अतुलनीय योगदान मिला है । “विश्व में लगभग **46** देशों में हिंदी -केअध्ययन एवं अध्यापन की व्यवस्था है। जिन देशों में अप्रवासी भारतियों की आबादी देश की जनसंख्या में **40%** से अधिक है, उन देशों में सरकारी और गैर सरकारी प्राथमिक एवं माध्यमिक स्कूलों में हिंदी की पढ़ाई होती है ।”

न्यूजीलैंडं से 'भारत दर्शन', कनाडा से ‘सरस्वती पत्र', हेल्‌्म-यू० के० से "हिंदी नेस्ट', 'क्षितिज', अमेरिका से “अन्यथा', 'हिंदी परिचय पत्रिका', 'पलायन', विश्व हिंदी न्यास समिति द्वारा प्रकाशित पत्रिकाएँ हैं। इन पत्र-पत्रिकाओं में कविता, नाटक, कहानी, समाचार, भेंटवार्ता, गजल, संस्मरण, मुक्तक, निबंध आदि लगभग सभी विधाओं का संकलन होता है।
ब्रिटेन के प्रवासी साहित्यकार तेजेन्द्र शर्मा, गौतम सचदेव, जकिया जुबैरी, अचला शर्मा, अमृता तोषी, उषा वर्मा, महावीर शर्मा, उषा राजे सक्सेना, कादम्बरी मेहरा, प्राण शर्मा, गोविन्द शर्मा आदि प्रमुख नाम हैं; जो हिंदी साहित्य सृजन में अपना अमूल्य योगदान दे रहे हैं|
अमेरिका के प्रवासी साहित्यकारों में उषा प्रियम्वदा, सोमवीर इत्यादि का उल्लेखनीय योगदान रहा है।

प्रवासी हिंदी साहित्य:

भारत में जब भी प्रवासी साहित्य के बारे में बात की जाती है, तो हमारी दृष्टि वर्तमान समय में उषा प्रियम्वदा, सोमवीरा, सुषम बेदी, रेणु गुप्ता/रोजवंशी, इला प्रसाद, पुष्पा सक्सेना, सुधा ओम ढ़ींगरा आदि महिला लेखिका हिंदी-साहित्य के क्षेत्र में बेटी दो अपनी अहम् भूमिका निभाई है । कहानी में 'सोमवीरा! की धरती की बेटी, 'दो आँखों वाले चेहरे', 'परछाइयों के प्रश्न', सुषम बेदी की 'चिडिया और

चील', 'तीसरी आँख', रेणु गुप्ता राजवंशी की 'कौन कितना निकट', 'ज़ीबन लीला', 'तमसो माँ ज्योतिर्गमय', सुधा ओम ढ़ींगरा की 'कौन सी ज़मीन अप्ती 'कमरा नं० **103**', 'सच कुछ और था', इला प्रसाद की 'इस कहानी का अंत ,हीं', 'तुम इतना क्यों रोई रूपाली', पुष्पा सक्सेना कृत 'माटी के तारे, 'प्यार के ज्लार्म', 'वेलेंटाइन डे', 'प्यार की शर्त; अमरेन्द्र कुमार की "चूड़ीताला और अन्य कहोनियाँ, 'गाँधी जी खड़े देखते हैं; अंशु जौहरी की "शेष फिर', कमलेश कपूर की 'पट पर तीन छाया' रजनीकान्त लहरी की 'प्रवासी की माँ'; प्रतिभा सक्सेना की 'सीमा के बंधन' |

उपन्यास के क्षेत्र में सुषम बेदी का अपना महत्त्वपूर्ण स्थान है। 'हवन', कतरा-दर-कतरा', 'इतर', 'गाथा' अमरबेल की, 'नवाभूम की रसकथा', 'मोर्चे' उपन्यास प्रकाशित हो चुके हैं। सुदर्शन प्रियदर्शनी जी के प्रमुख उपन्यास "सूरज नहीं उगेगा', जलाक, रेत के घर', न भेज्यो विदेश; 'अब के बिछुड़े' सुधा ओम ढ़ींगरा का क्रान्तिकारी नक्काशीदार केबिनेट' है।

प्रवासी साहित्य: चुनौतियाँ और संभावनाएँ:

लेखकों से जहाँ एक ओर साहित्य में नवीन संभावनाओं को देखा जा सकता है, तो वहीं दूसरी ओर चुनौतियाँ भी सामने खड़ी दिखाई देती दहैं।' "आज विदेश में रहने वाले हिंदी साहित्यकारों की सभी रचनाओं को प्रवासी सांहित्य' की संज्ञा से अविहित करना लगभग प्रवृत्ति सी बनती जा रही है। फलत: अनेक कारणों से विदेश जा बसने वाले साहित्य प्रेमजन यदि कुछ रचनाएँ बैठकर लिख लेते हैं, तो भारत में बैठे उनके मित्र, संपादक, आलोचक, उन्हें प्रवासी साहित्य की संज्ञा से विभूषित करने लगते हैं |" विश्व के हिंदी साहित्य का मूल्यांकन करने से पूर्व प्रवासी भारतीय शब्द का एक स्पष्ट अर्थ जानना अत्यन्त आवश्यक है । प्रवासी भारतीय' शब्द पिछली शताब्दी में उन उपनिवेशवादियों भारतियों के रूप में प्रयुक्त होता था, जिनके पुरखे **400-450** वर्ष पहले उपनिवेशवादियों द्वारा दिखाये गए सुखद सपनों के लालच में पराए देशों में ले जाकर बसा दिए गए थे, बल्कि यह कहना अधिक समाचीन होगा कि उन्हें बसने के लिए विवश कर दिया गया था। पीढ़ी दर पीढ़ी चली आ रहीं उनकी सन्तानें प्रवासी भारतीय कहलाती. हैं । भारत के स्वतंत्रता-संग्राम के दिनों में महात्मा गाँधी जी का ध्यान भी प्रवासी" भारतियों की समस्याओं की ओर गया था। इसका एक बड़ा कारण यह भीछां कि अपने साउथ अफ्रीका के प्रवास में इस प्रकार की समस्याओं से वे स्वयं मीव्गुजरे थे | गिरिराज किशोर ने अपने पहले उपन्यास गिरमिटिया में प्रवासी हिंदीं साहित्य के संदर्भ में लिखा है|

प्रवासी हिंदी महिला कथाकारों का सामान्य परिचय:

भारत से बाहर लिख रहे लेखकों को, जो भारत से या किसी दूसरे देश को छोड़कर गए हों, उन्हें प्रवासी लेखक के नाम से जाना जाता है। इन प्रवास करने वालों में पुरुष लेखकों के साथ-साथ महिला कथाकारों ने भी प्रवास किया। जिसमें मुख्यतः उषा प्रियम्वदा, सुधा ओम ढींगरा, अर्चना पैन्यूली, दिव्या माथुर, इला प्रसाद, सुषम बेदी, अचला शर्मा, अनिल प्रभा कुमार, उषा वर्मा, पूर्णिमा वर्मा, उषा देवी कोल्हल्ैकर, कादम्बरी मेहरा, तोषी अमृता, सारिका सकेना, सुदर्शन प्रियदर्शिनी, अंज़ैलां संधीर, उषा राजे सक्सेना, नीना पॉल, पुष्पा सक्सेना, देवी नागरानी, अंशु>जौहरी, कविता वाचवनली, शैलजा सक्सेना, रेखा राजवंशी, रचना श्रीवास्तव, अरुणों सब्बरवाल, मृदुला कीर्ति, शशि पाधा, अनीता कपूर आदि अनेक लेखिकाओं.त्ते,हिंदी साहित्य के क्षेत्र में उच्चकोटि की रचनाएँ की हैं।

इन रचनाओं के पीछे एक ओर जहाँ इनकी अपने देश की पुरानी यादें रही हैं तो वही दूसरी ओर यह्वैवांस में रह कर अपनी पहचान को बनाए रखने का संघर्ष है जो इनकी रचन्नाओं में बड़ी मार्मिकता के साथ अभिव्यक्त हुआ है। प्रवासी महिला कथाकारों ङ्गे, हिंदी साहित्य को विश्वव्यापी स्तर पर विकसित करने में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिक्रीं निभाई है। उनका सामान्य परिचय इस प्रकार है। सुधा ओमे ढ़ींगरा सुधा ओम ढींगरा का जन्म जालंधर, पंजाब, भारत में हुआ था। पैदा होते ही यह पोलियो की शिकार हो गईं थीं। माता-पिता दोनों डॉक्टर होते हुए भी इन्हें पोलियो के रोग से छुटकारा न दिला सके परन्तु कुछ लाभ जरूर हुआ। अन्य बच्चों की तरह पोलियो की पूर्ण शिकार तो नहीं हुईं, पर एक पैर आज भी पोलियो का शिकार है। परिवार के सभी लोग सकारात्मक सोच के थे इसलिए आत्म सम्मान को ग्लानि नहीं हुई। माता-पिता ने पूर्णरूप से हर क्षेत्र में उत्साहवर्धन किया। स्कूल के समय में बच्चों के साथ खेल तो नहीं सकीं, पर बैठे-बैठे दुनिया के सपने बुनती रहीं। इन्हें इस बात से चिढ़ थी कि कोई इन्हें सहायता भरे शब्दों से संबोधित करे। स्वयं उन्हीं के शब्दों में“बस मुझे किसी की भी सहानुभूति नहीं चाहिए थी और न ही 'बेचारी' शब्द अपने लिए सुनना चाहती थी ।” यह मजबूत, निडर और सकारात्मक सोच रखने वाली थीं। बच्चों के साथ खेलते हुए गिर जाती तो लोग कहते कि कोई बात नहीं लंगड़ी है। इस बात पर बालमन को चोट लगती थी। पोलियो से बचकर भी शरीर बहुत कमजोरा। इसी कारण बचपन बहुत से आनन्द और कार्यों से वंचित रह गया। स्कूल में विद्यार्थियों दूवारा लंगड़ी शब्द ने ही सुधा ओमब्ढ्रींगरगा जी को लेखिका बना दिया। उन्होंने अकेले में बैठ कर सोचना और फिहूँलिखना प्रारम्भ कर दिया।

सुधा ओम ढ़ींगरा अपने साहित्य के संबंध में लिखती हैं, कि-यूँ कह सकते हैं कि आपके अन्दर लिखने के बीज हैं... परिवेश, हालात-त्पैरिस्थितियाँ, अनुभव उन्हें खाद पानी देते हैं और वे फूट पड़ते हैं...। बचपन के.क़ुटु अनुभवों और शारीरिक संघर्ष ने मेरे भीतर पड़े बीजों को स्फुटित कर दियाकषोलियो से बचकर भी हमारा शरीर बहुत कमजोर था और बचपन बहुत सी बातों(सै वंचित रहा | संवेदनशील बहुत थी... अपना दर्द, अहसास, पीड़ा छुपाकर मैं बस्च, लिखती रही... बाद में यह लेखन कहानियों व कविताओं का रूप धरने लगा | इनके लेखन में इनके पिता का बहुत बड़ा योगदान रहा। पिता द्वारा कविता पर दिया गया प्रोत्साहन उनके लिए सराहनीय रहा। कविता के संबंध में इनके पिता के विचार कुछ इस प्रकार थे “अरे बड़ी अच्छी तुकबंदी की है, यह कविता बन सकती है, और फिर मुझे प्रोत्साहित करते- 'जो बच्चे खेल रहे हैं, इनके पास यह प्रतिभा नहीं है... इन्हें बस खेलना आता है। तुम्हें ईश्वर ने लिखने की प्रतिभा दी है, तुम कितना अच्छा लिख लेती हो... देखो तुम उनसे कितनी भिन्न हो |” यहीं से इनका लेखन कार्य प्रारम्भ हुआ। कविता, कहानी, उपन्यास के क्षेत्र में यहीं से उन्होंने अपना कदम रखा और धीरे-धीरे लिखना प्रारम्भ किया, क्योंकि लिखना एक निरन्तर प्रक्रिया है। इसी कारण पूर्ण निष्ठा के साथ वह लिखने में लग गयीं | शब्दों के चयन में इन्हें महारथ हासिल थी। वाक्य के प्रसंग क्षेत्र में शब्दों का चयन इन्हें भली-भाँति आता है। उन्हीं के शब्दों में “शाब्दिक चित्रण ऐसा है कि हम स्वयं अपने सामने कविता का एक खाका, एक दृश्य पटल का रूप देख लेते हैं-और शनेः शनै: हम भी उसका हिस्सा बन जाते हैं ।* कविता, नाटक, निबंध सभी#कीं अपनी एक विधा होती है। सुधा जी उसी विधा के अनुसार रचना करती हैं; क्योंकि जब तक जिस विधा में रचना की जा रही हैं, उसके तत्व उसमें नहीं होंगै*तब तक वह विधा अपना प्रभाव नहीं डाल सकती। यही कारण है कि इनकी प्रत्येक विधा में विधानुसार तत्व देखने को मिलते हैं, जिसके कारण पाठक जर्ग/इनके साथ जुड़ा हुआ है।

सुषमा बेदी- सुषमा बेदी का जन्म 4 जुलाई 4945 ई० को फीरोजपुर* शहर में हुआ था। वर्तमान समय में इनका निवास स्थान अमेरिका में है। इंद्रप्रैसेथें कॉलेज, दिल्ली से 4964 ई० में बी० ए०, 966 ई० में एम० ए० और 4968 ई० में दिल्ली यूनीवर्सिटी से एम० फिल० की डिग्री प्राप्त की | 4980 ई० में पंजाब/यूनीवर्सिटी से डॉक्टर की उपाधि प्राप्त की। सुषमा बेदी के व्यक्तित्व में' कला और संगीत का सुन्दर समन्वय देखने को मिलता है। एक ओर लेखूर्ृन-और दूसरी ओर संगीत। यह संगीत और प्रतिभा बहुत कम लेखिकाओं में एक ज़रा देखने को मिलती है। गाने का शौक तो इन्हें बचपन से ही था। घर के साथ इक्कूल से भी इन्हें गाने का प्रोत्साहन मिला। किसी विशेष अवसर पर लाकर इन्हें गाने" के लिए खड़ा कर दिया जाता था। 1984 ई० से कोलंबिया विश्वविद्यालय, न्यूयार्क में हिंदी भाषा और साहित्य की प्रोफेसर बनीं। यहीं से इनका प्रवासी-जीवन प्रारम्भ हुआ। अपने प्रवासी-जीवन के संदर्भ में यह लिखती हैं कि-'हम अपने जीवन की असंगति और विसंगतियों से जूझ रहे हैं एक समंजन | तभी हम लगातार विरोधी संस्कृतियों, जीवन शैलियों के बीच थपेड़े खाते चरित्रों के जीवन की उलझने सुलझाते रहते हैं, उन विसंगतियों के बीच संगति खोजने की कोशिश करते हैं। यही मुख्य स्वर है। डायसपोरा के साहित्य का और आज के जीवन की इन विसंगतियों ने इस तरह हमें घेरा और दबाया हुआ है|" इन्होंने अनेक रचनाओं का अंग्रेजी, उर्दू, फ्रेंच और डच में अनुवाद किया है। भाषा के क्षेत्र में अनेक पुस्तकों की रचना की | सुधा ओम ढ़ींगरा जी इनके संबंध में लिखती हैं कि- 'सुषम बेदी अमेरिका के उन रचनाकारों में से एक हैं, जिन्होंने वैश्विक हिंदी साहित्य को बहुत गौरव प्रदान किया है।"

हिंदी कथा साहित्य के विकास में प्रवासी महिला कथाकारो का अध्ययन:

हिंदी भाषा तथा हिंदी साहित्य को एक नये आयाम तक पहुँचाने में प्रवासी साहित्यकारों का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। इसमें पुरुषों के समान ही महिलाओं ने भी अपनी अहम् भूमिका निभाई है। प्रवासी लेखिकाओं के लिए जीवन घर के उत्तरदायित्व को निभाते हुए यह और भी मुश्किल हो जाता है कि वहल्ाहित्य के क्षेत्र में अपना योगदान दे सकें; साथ ही साहित्य जगत में आकर संघर्ष और चुनौतियों का सामना करना पड़ता है; इसके बावजूद भी वर्तमान समयू-मैं प्रवासी महिला-लेखन का कार्य पूर्ण उन्नति पर है। वर्तमान समय में कई महिला कथाकारों)नें उच्चकोटि के साहित्य की रचना की है। जिसमें सुधा ओम ढ़ींगरा, उषा .प्रिय्रम्वदा, उषा राजे सकतेना, पुष्पिता अवस्थी, जकिया जुबैरी, इला प्रसाद, पुष्पा सक्सेना, प्राण शर्मा, सुषमा बेदी, दिव्या माथुर, अचला शर्मा, तोशी(अमृता, कादम्बरी मेहरा, नीना पॉल, शैल अग्रवाल, शैलजा सक्सेना, सोमवीरा, कीर्ति चौधरी, पूर्णिमा वर्मन, अनीता कपूर आदि प्रमुख हैं। इज्कें साहित्य में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से युग-परिवेश की शिक्षा और विकास की अवधारणा में बदलते जीवन-मूल्यों का प्रभाव साफ परिलक्षित होता है। इन साहित्यकारों को लेखन इच्छानुसार करना पड़ा या मजबूरीवश, परन्तु इनके साहित्य में विडम्बनाओं, समस्याओं, तथा संघर्षों की वास्तविकता को दिखाने का प्रयत्न किया गया है। जिसमें पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, धार्मिकु-चु शैक्षिक क्षेत्र में यथार्थ और अलगाव की स्थितियों को दर्शाया गया है। इन्ऊप्रवासी महिलाकथाकारों ने इन्हीं परिस्थितियों से रू-ब-रू होकर अनछुए पहलुओं को अपने साहित्य का विषय बनाया है। इस क्षेत्र में प्रवासी साहित्यकारों का पूर्ण योगदान यह है कि उन्होंने आधुनिक समाज खासकर भारतीय लोगों. क्री सामाजिक, आर्थिक एवं पारिवारिक समस्याओं को दर्शाते हुए उनमें बदलाव, लाने का प्रयास किया है।

निष्कर्ष:

प्रवासी साहित्य की संजीवता और संवेदनात्मकता के कारण प्रवासी हिंदी साहित्य को गतिशीलता मिल रही है। नए रिश्ते, नई जीवन शैली, नए संबंधों को उजागर करने का सार्थक प्रयास है। प्रवासी साहित्य की अविरल धारा में प्रवासी महिला कथाकारों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। नई दुनिया का आंतरिक, बाह्य तथा मनोवैज्ञानिक स्थिति का स्पष्ट वर्णन इन्होंने किया है। प्रवासी भारतियों क़ा समृद्ध अतीत है जो आज उन्हें समृद्धपूर्ण साहित्य सृजन को प्रेरित कर विशेष स्थान प्रदान कराता है। उत्कृष्ट संस्कृति समृद्ध गौरवमयी भारतीय परिवेश उन्हें सदैव प्रेरणा से ओतै-प्रोत करता है। संस्कृति में टकराहट, औरतों के प्रति अन्याय, धर्म, पारिवारिक संबंध आदि की स्पष्ट झलक इनके साहित्य में देखी जा सकती है। प्रवासी साहित्य की परम्परा में इन महिला साहित्यकारों का महत्त्वपूर्ण योगदान इसलिए भी है क्योंकि इनके यहाँ नई दुनिया की आंतरिक तथा मनोवैज्ञानिक स्थिति का आकलन "करने में नया दृष्टिकोण नज़र आता है। उनकी यही रचनाशीलता प्रवासी साहित्य को भारतीय साहित्य से अलग करती है। इनके साहित्य में जहाँ एक ओर भारतीय मूल्यों एवं संस्कारों का निर्माण होता है। वहीं पर दूसरी ओर घटित होने वाली प्रत्यूके घटना को इन्होंने अपने साहित्य के माध्यम से भारत तथा भारतेत्तर देशों में फैलाने का काम किया है।

ग्रंथसूची:

मूल ग्रन्थ
अर्चना पैन्यूली
इला प्रसाद
उषा प्रियम्वदा
उषा राजे सक्सेना
दिव्या माथुर
नीना पॉल
पुष्पिता अवस्थी
सुदर्शन प्रियदर्शिनी
सुधा ओम ढ़ींगरा
सुषमा बेदी

संदर्भ ग्रंथ सूची
वेयर डू आई बिलांग, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, दूसरा संस्करण--
पॉल की तीर्थयात्रा, राजपाल एंड संस, प्रथम संस्करण- हाइवे ई-**47**, ज्ञान गंगा प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण--
उस स्त्री का नाम, भावना प्रकाशबद्दिल्ली, प्रथम संस्करण रोशनी प्री अधूरी सी, भावना प्रकाशन, नई दिल्ली,
प्रथम संस्करण
कितना बड़ा झूठ, राजकमल प्रकाशन, नवीन शाहदरा दिल्ली संस्करण
पचपन खम्भे लाल दीवारें, राजकमल प्रकाशन, नवीन शाहदरा, नई दिल्ली, संस्करण--
भया कबीर उदास, राजकमल प्रकाशन, नवीन शाहदरा नई दिल्ली, संस्करण--
शेष यात्रा, राजकमल प्रकाशन, नवीन शाहदरा, नई दिल्ली, संस्करण

वह रात और अन्य कहानियाँ, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण–
तुम इतनी क्यों राई रूँपाली, भावना प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण
शाम भर बातें, वाणी प्रकाशन दिल्ली, प्रथम संस्करण
हिंदी & स्वर्ग.इन, सस्ता साहित्य मंडल, दिल्ली, प्रथम संस्करण
कुछ गाँव-गाँव कुछ शहर-शहर, यश प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण--
तीसरी आँख, पराग प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण--
नवाभूम की रस कथा, नेशनल पब्लिकेशन हाऊस, दिल्ली, संस्करण--
मोरचे, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण-
हवन, अभिरूचि प्रकाशन, शाहदरा, दिल्ली, संस्करण--
प्रवासी भारतीय की पीड़ा, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण–
हिंदी का प्रवासी साहित्य, अमित प्रकाशन, गाजियाबाद, प्रथम संस्करण--
प्रवासी भारतीय की हिंदी सेवा, अभिराम प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण--
अमृत लाल नागर के उपन्यासों में समाज एवं संस्कृति, नेहा प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण--
प्रवासी महिला कथाकार, सारंग प्रकाशन, कानपुर, प्रथम संस्करण--